Topic 69 – नकारान्त पथिन् इत्यादि अन्य हलन्त पुल्लिंग शब्द।

पथिमथ्यृभुक्षामात्।

एषामाकारोऽन्तादेशः सौ परे।

इतोऽत् सर्वनामस्थाने।

पथ्यादेरिकारस्य अकारः स्यात् सर्वनामस्थाने परे।

थो न्थः।

पथिमथोस्थस्य न्थाऽऽदेशः सर्वनामस्थाने। पन्थाः पन्थानौ, पन्थानः

भस्य टेर्लोपः।

भस्य पथ्यादेष्टेर्लोपः। पथः। पथा। पथिभ्याम्। एवं – मथिन्, ऋभुक्षिन्।

पथिन (मार्ग), मथिन् (मथनी) तथा ऋभुक्षिन् (इन्द्र) शब्दों को 'सु' परे होने पर आकार आदेश होता है। अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से यह आकार आदेश अन्त्य नकार के स्थान पर ही होगा। उदाहरण के लिए पथिन् + स में 'सु' परे होने के कारण नकार को आकार होकर 'पथि आ + स' रूप बनेगा।

पथिन्, मथिन् तथा ऋभुक्षिन शब्दों के ह्रस्व इकार के स्थान पर सर्वनामस्थान (सु, औ, जस्, अम् तथा औट्) परे होने पर ह्रस्व अकार आदेश होता है। उदाहरण के लिए पथि आ सु में 'सु' परे होने पर 'पथिन' के इकार

को अकार होकर 'पथ आ स्' रूप बनेगा।

सर्वनामस्थान परे होने पर पथिन् और मथिन् शब्दों के थकार के स्थान पर 'न्थ' आदेश होता है। उदाहरण के लिए 'पथ आ स्' में सर्वनामस्थान 'सु' परे होने के कारण थकार को 'न्थ' होकर 'पन्थ आ स्' रूप बनेगा। फिर सवर्णदीर्घ तथा सकार को रुत्व-विसर्ग करने पर 'पन्थाः' रूप सिद्ध होता है।

भ-संज्ञक पथिन्, मथिन् तथा ऋभुक्षिन् शब्दों की 'टि' का लोप होजाता है। उदाहरण के लिए पथिन् + अस् में भसंज्ञक 'पथिन्' की 'टि-इन' का लोप होकर 'पथ + अस' रूप बनेगा। फिर सकार का रुत्व-विसर्ग करने पर पथः रूप सिद्ध होगा।